Chapter 16 धूमिल | CLASS 11TH HINDI | REVISION NOTES ANTRA

कवि सुदामा पांडे (धूमिल) का जीवन परिचय – Sudama Pandey Dhoomil

धूमिल का पूरा नाम सुदामा पांडेय 'धूमिल' है। इनका जन्म 9 नवम्बर 1936 को वाराणसी जिले के खेवली गांव में हुआ। बालक सुदामा ने सन् 1953 में हाई स्कूल परीक्षा पास की। सन् 1958 में आई.टी.आई. वाराणसी से विद्युत-डिप्लोमा किया और वहीं अनुदेशक के पद पर नियुक्त हो गए। असमय ही ब्रेन-ट्यूमर हो जाने के कारण 10 फ़रवरी 1975 को इनका स्वर्गवास हो गया।

इनकी प्रमुख रचनाएं हैं– बांसुरी जल गई, संसद से सड़क तक, कल सुनना मुझे और सुदामा पांडेय का प्रजातंत्र। धूमिल को मरणोपरांत साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इनकी काव्यगत विशे सुदामा पांडेय 'धूमिल' 'नई कविता' के सशक्त हस्ताक्षर थे।

उनके काव्य में एक विशेष प्रकार का गवैयेपन दिखाई देता है धूमिल की कविता में परंपरा, सभ्यता, शालीनता और भद्रता का विरोध है। इन्होंने व्यंग्यों के माध्यम से उपहास, झुंझलाहट और पीड़ा को व्यक्त किया है।

इनके काव्य में मुहावरें, लोकोक्तियों और सूक्तियों का सुंदर प्रयोग मिलता है। संवाद-शैली के प्रयोग से भाषा सशक्त हो गई है। लाक्षणिकता और प्रतीकात्मकता इनकी भाषा की विशेषता है भाषा सरल और सहज हैं। इन्होंने मुक्त छंदों का प्रयोग किया है।

Table of Contents

घर में वापसी कविता का सारांश – Ghar Me Wapsi Poem Summary

घर में वापसी कविता का सारांश – Ghar Me Wapsi Poem Summary

'घर की वापसी' धूमिल जी की गरीबी से संघर्ष कर रहे परिवार की दुख भरी कविता है। कोई भी व्यक्ति अपने रोज की भाग दौड़ वाली जिंदगी में प्रेम, ममत्व, स्नेह, सुरक्षा, ऊर्जावान रिश्ते चाहता है। वह एक ऐसा घर चाहता है जहां उस घर में रहने वाले लोगों के बीच आपसी संबंध मधुर, परिपक्व, ऊर्जावान हो।

परन्तु इस कविता में जिस घर का उल्लेख किया गया है उसकी अपनी त्रासदी है। त्रासदी यह है कि उस घर के लोगों के बीच आपस में संवेदनहीनता कि दीवार खिंच गई है। इस संवेदनहीनता का कारण गरीबी है।

ऐसा नहीं है कि ये परिवार पैसे की ओर आकर्षित या धन का लालच रखता है। बल्कि सच तो ये है कि परिवार के सभी सदस्यों को एक-दूसरे की मजबूरी और लाचारी को जानते हैं, समझते है। इसलिए वे एक दूसरे से बोलते नहीं है।

यह परिवार गरीबी से लड़ते-लड़ते इतना ऊर्जाहीन, दीन-हीन जर्जर हो गया है कि आपसी रिश्तों को जीवित रखने के लिए जिस संवाद और ऊर्जा की जरूरत होती है, वह समाप्त हो चुकी है। परिवार में पांच सदस्य है।

https://www.evidyarthi.in/

सभी के बीच खून का रिश्ता है, परंतु गरीबी के कारण ये सभी अपने मन के भावों को अभिव्यक्त भी नहीं कर पाते है। ये संवाद हीनता इनके बीच आपस में भाषा रूपी जर्जर ताले को खोल भी नहीं पाती है।

यहां तक कि ये आपस में एक दूसरे के प्रति अपने दायित्वों, कर्त्तव्यों को भी गरीबी के कारण पूरा कर पाने में असमर्थ है। गरीबी इनके रिश्तों को आपस में जिंदा रखने में सबसे बड़ी बाधक है।

evidyarthi

https://www.evidyarthi.in/